आभार : डा. देश दीपक
kissekahani.com

हास्य कहानी

डेडलॉक

अवतार सिंह

दादाजी को कई दिन नींद नहीं आई. रात रात भर करवटें बदलते रहे. उनके कलेजे में जैसे तीर चुभ रहे थे.

पिंकी ने उन्हें बताया था कि मुहल्ले के बच्चों ने पालियामेंट बनाई और उसके स्पीकर बने थे—पप्पू के नानाजी. दादाजी दस वर्षों से इस गली में रह रहे थे. गली के सारे बच्चे उनके हाथों में खेल कर बड़े हुए थे. मुहल्ले के एक एक बच्चे की वह नस नस पहचानते थे. इस पर भी कोई बाहर का आदमी आ कर मुहल्ले की पालियामेंट का स्पीकर बन जाए, ऐसा अनर्थ उन्होंने कभी नहीं सुना था.

पहले तो दादाजी को बच्चों पर क्रोध आता रहा कि दुष्टों ने मुझे जलाने के लिए यह सब किया है. फिर उन्होंने सोचा कि हो न हो, पप्पू के नानाजी ने बच्चों को फुसला लिया होगा. बच्चे भोले तो होते ही हैं. हर ऐरे-गैरे की बातों में आ जाते हैं.

दिन-रात दादाजी के आगे वह दृश्य घूमता था, जब पालियामेंट की बैठक हुई होगी. पप्पू के नानाजी शान से स्पीकर की कुर्सी पर बैठे होंगे. सामने सरकारी और विरोधी दलों में घुंआधार बहस चलती होगी. बीच बीच में नानाजी अपना रोब डालते होंगे.

दादाजी इस कल्पना में डूबे दुखी होते रहे. वह जान गए कि उनके दुखी मन को तभी शांति मिल सकती है. जब पालियामेंट की एक दूसरी बैठक बुलाई जाए, जिसके स्पीकर वह बनें.

पर इसके लिए जरूरी था कि गली-मुहल्ले के बच्चों को एक जगह इकट्ठा कर के उनसे बात की जाए. बच्चों को बारी बारी से बुलवा कर एक जगह इकट्ठा करना कुछ ऐसा ही काम था, जैसे बिना तले की बाल्टी भरना. ऊपर से भरो, नीचे से पानी बह जाए. दादाजी दो-चार बच्चों को बुलवा कर बैठा लेते. जब तक पिंकी दूसरों को बुलाने जाती, पहले वाले बहाना बना कर खिसक जाते.

जहां चाह, वहां राह! दादाजी ने इसका हल भी ढूंढ़ निकाला. मंगलवार को उन्होंने मम्मी से यह कह कर पांच रुपये लिये कि मैं प्रसाद बांटूंगा.

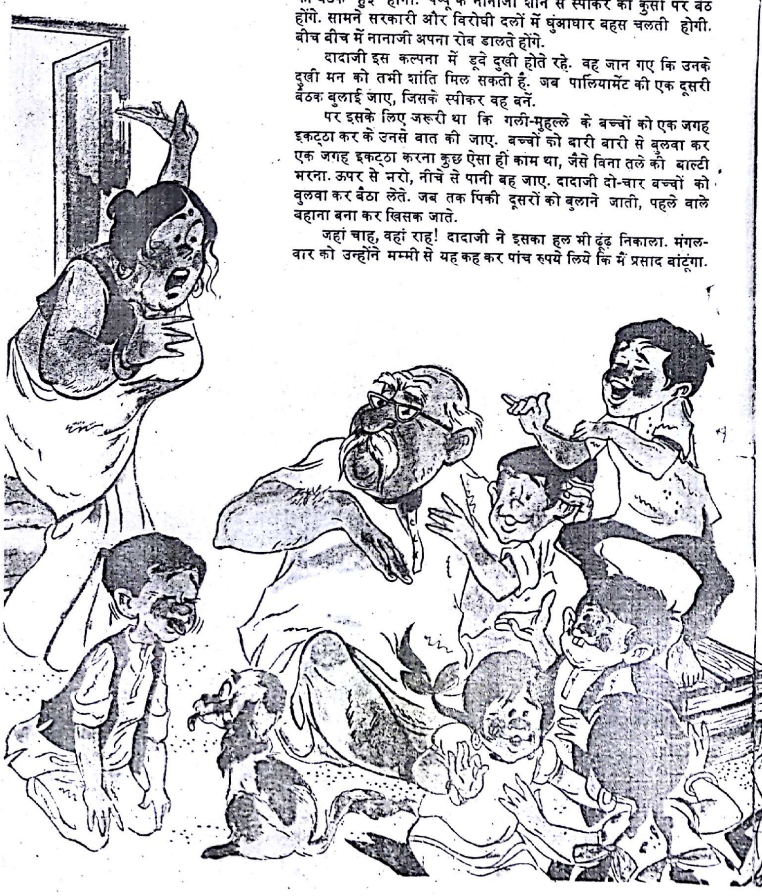

बर्फियां खरीद कर वह मंदिर में जा पहुंचे. पुजारी ने जब अपनी बर्फियां निकाल कर अलग रखीं, तो दादाजी कहने को हुए कि, भैया, जरा हाथ रोक कर, बच्चों को भी बांटनी हैं, पर भीड़ के कारण चुप हो रहे.

बचा हुआ माल ले कर दादाजी घर आए और पिंकी से बोले, "पिंकी बेटी, मुहल्ले के एक एक बच्चे को खबर कर दो कि दादाजी मंगलवार की बर्फियां बांट रहे हैं."

"दादाजी, आप मेरे लिए चौथाई बर्फियां अलग रख दें, तो मुहल्ले का एक एक बच्चा यहां बुला दूंगी."

"स्वीकार है," दादाजी ने उत्साह से मान लिया.

पिंकी बाहर दौड़ गई. बर्फियों का नाम सुनते ही डेढ़-दो मिनिट में ही आंगन बच्चों से भर गया.

दादाजी ने पूछा, "क्यों, सारे ही आ गए हैं न?"

"हां, दादाजी! अब आप बर्फियां बांटनी शुरू कीजिए. शुभ काम में देरी कैसी?" राकेश बोला.

"सो तो ठीक है. पर पहले तुम लोग मेरी एक-दो बातों का जवाब दो. मैंने सुना है कि तुम लोगों ने पालियामेंट बनाई थी?"

"हां, दादाजी, एक पालियामेंट बनाई तो थी, पर वह पहले ही दिन टूट गई," पप्पू यूं बोला जैसे पालियामेंट कोई खिलौना हो.

"क्या बकता है?" दादाजी ने उसे जोर से डांटा.

"मूर्ख! प्रजातंत्र देश में पालियामेंट कभी नहीं टूटा करती. ऐसा कहना, देश का अपमान करना है. पालियामेंट चाहे मुहल्ले की ही हो, हमें उसका आदर करना चाहिए."

दादाजी ने आगे कहा, "खैर, क्या हुआ था तुम्हारी पालियामेंट में?"

पिंकी बोली, "दादाजी, हम प्रश्नों पर बहस कर रहे थे कि लड़ाई हो गई."

"पालियामेंट में लड़ाई हो गई! स्पीकर किस अनाड़ी को बना रखा था?" दादाजी ने तिनक कर पूछा.

"पप्पू के नानाजी को," कोई धीमे-से बोला.

"अच्छा! तो वह साहब थे. स्पीकर को पालियामेंट में तुरंत वहीं बहस रोक देनी चाहिए, जहां सदस्यों में आग भड़कने वाली हो. कितने दल थे तुम्हारी पालियामेंट में?"

"दल कहां थे, दादाजी? सब अपनी अपनी मर्जी से इधर-उधर बंट गए थे," राकेश ने कहा.

"मर्जी से बंट गए थे. यही तो सबसे बड़ी गलती है. जानते हो, हमारे देश में आजकल अशांति क्यों है? क्योंकि आपके चुने हुए सदस्य मजे में जब जी चाहा दल बदल लेते हैं और राज्य-सरकारें टूट जाती हैं," कहते हुए दादाजी ने इस तरह नाराजगी से बच्चों को देखा, जैसे उन्होंने ही सदस्य चुनकर विधान सभाओं में भेजे हों.

तभी दादाजी ने एलान किया, "इस बार मैं ठीक तरह पालियामेंट बनवाता हूं. खुद स्पीकर बनूंगा. फिर देखें कैसे सब कार्यवाही ठीक तरीके से नहीं चलती?"

"मंजूर है, दादाजी," कुछ बड़े बच्चे बात खत्म करने के लिए बोले.

"पहले वे बच्चे हाथ उठाएं, जो अपने दल बना सकते हों," दादाजी ने पूछा.

इस पर कई बच्चों ने हाथ उठा दिए. दादाजी कुछ देर मन में हिसाब लगाते रहे. फिर माथे पर बल डाल कर बोले, "भई, सिर्फ कूकी और राकेश ही दल बनाएंगे. तुमने देखा होगा कि कई राज्य-सरकारों में अधिक दल होने के कारण वहां का शासन ठीक नहीं चलता. कूकी और राकेश, तुम दोनों अपने अपने दलों के सदस्यों की लिस्टें बना कर कल शाम तक मुझे दे जाओ. अपने दलों का कोई नाम भी रख देना."

"मेरा दल होगा—लक्ष्मी दल," कूकी बोली.

"मैं नाम रखूंगा—खिलाड़ी दल," राकेश कैसे पीछे रहता.

"यह तुम्हारी अपनी मर्जी. जिस किसी दल के अधिक सदस्य होंगे, वह मंत्रिमंडल बनाएगा. फिर हम किसी बिल पर बहस करेंगे."

"बिलपर बहस? कैसा बिल, दादाजी?" बच्चों ने हैरान होकर पूछा.

"भई, जब कोई नया कानून बनाना हो, तो उसे पहले पालियामेंट के सामने रखते हैं, जब वह पास हो जाता है, तो कानून बन जाता है."

"यानी पालियामेंट कानून बनाती है," मधु ने पूछा.

"दादाजी, मेरा सवाल है, हमें बिल का फैसला भी

Scanned by CamScanner

अभी कर लेना चाहिए," कूकी बोली.

"जरूर, हां तो पहला बिल क्या होगा?"

बच्चों ने अनेकों बिल सुझाए, पर दादाजी को कोई भी पसंद नहीं आया. आखिर वह स्वयं ही बोले, "भई, हम पहले दिन इस पर बहस करेंगे कि बच्चों को मुहल्ले में खेलना चाहिए या खेल के मैदान में. और देखो जो पालियामेंट में अच्छा बोलेंगे, उन्हें हम इनाम देंगे. तुम सब थोड़ी-बहुत तैयारी करके आना."

"दादाजी, इनाम क्या होगा, इसका भी फैसला कर दीजिए," आशा ने पूछा.

"इसका फैसला भी हमारी पालियामेंट ही करेगी," दादाजी बोले.

"अरे दादाजी, यह आपने क्या कर दिया? बर्फियों का लिफाफा जमीन पर रख दिया! उसमें चींटियां घुस जाएंगी," राजू एकाएक ही यूं चिल्लाया, जैसे दादाजी ने कोई बड़ी भारी गलती कर दी हो.

दादाजी इशारा समझ कर खूब हंसे. फिर उन्होंने सब बच्चों को बर्फियां बांटीं और यह सभा खत्म हुई.

●

अगले दिन दादाजी के पास कूकी और राकेश ने अपने दलों के सदस्यों की लिस्टें दे दीं. दादाजी लिस्टें पढ़ कर सन्नाटे में आ गए. कूकी की लिस्ट में सिर्फ लड़कियों के नाम थे, राकेश की लिस्ट में लड़कों के. यहां तक कि कूकी का भाई सन्नी 'खिलाड़ी दल' में था, राकेश की दोनों बहनें मधु और इंदु 'लक्ष्मी दल' में थीं.

दादाजी ने इस पर माथापच्ची नहीं की. उन्होंने दोनों दलों के सदस्य गिने. 'लक्ष्मी दल' में जहां बारह सदस्य थे, राकेश के दल में कुल नौ थे.

दादाजी ने कूकी को मंत्रिमंडल बनाने को कहा, और पालियामेंट की बैठक हुई.

इस बार सारा इंतजाम दादाजी ने अपने हाथों करवाया. घर में ड्राइंग-रूम का फर्नीचर कुछ देर के लिए उन्होंने आंगन में रखवा दिया. पालियामेंट की बैठक अंदर कालीन पर शुरू हुई. दादाजी सबके आगे बैठे.

लड़कियां एक तरफ बैठी थीं, लड़के दूसरी तरफ. बीच में दादाजी ने काफी जगह खाली छुड़वा दी थी ताकि हाथापाई न होने पाए.

कूकी प्रधान मंत्री थी. उसी ने बिल पर बहस का आरंभ करते हुए कहा, "माननीय सदस्यगण, आपको याद होगा, कि स्पीकर महोदय ने एक बिल सुझाया था—बच्चों को मुहल्ले में खेलना चाहिए या खेल के मदान में. मंत्रिमंडल ने इस पर विचार किया और हम इस नतीजे पर पहुंचे कि लड़कियों के खेल ऐसे होते हैं जो बाहर खुले मैदान में खेले नहीं जा सकते—जैसे रस्सी कूदना. खेलने की जगह का प्रश्न तभी उठता है जब कि क्रिकेट या फुटबाल खेली जा रही हो. दूसरे शब्दों में यह बिल सिर्फ लड़कों पर लागू होता है, इसलिए बिल का रूप बदल कर इस तरह कर दिया गया है कि लड़कों को मुहल्ले में खेलने देना चाहिए या नहीं."

'खिलाड़ी दल' में हो-हल्ला मच गया. सारे लड़के शोर करने लगे.

दादाजी ने उन्हें डपटा, "शांति रखिए! आपको जो कहना हो बारी बारी से बोलिए. सबको समय दिया जाएगा."

"स्पीकर महोदय, क्या प्रधान मंत्री को यह अधिकार है कि वह आपके पेश किए हुए बिल में फेर-बदल कर दे?" राजू ने पूछा.

"जी हां, प्रधान मंत्री चाहें, तो बिल में परिवतन कर सकती है," दादाजी ने माना.

"पर बिल को इस रूप में रखना हमारे पूरे दल का अपमान करना है. हम वाक-आऊट कर जाएंगे," विरोधी दल के नेता राकेश ने धमकी दी.

दादाजी घबराए. यदि विरोधी दल वाक-आऊट कर गया, तो पालियामेंट में क्या खाक मजा रहेगा. सोच कर बोले, "आप प्रधान मंत्री के पेश किए हुए इस बिल पर बहस होने दीजिए. इसे निबटाने के बाद हम बिल के दूसरे भाग पर बहस करेंगे कि लड़कियों को बाहर गलियों में खेलना चाहिए या घर के अंदर आंगनों में."

"हां, यह हमें स्वीकार है," राकेश मान गया.

"प्रधान मंत्री बिल पर अपना भाषण जारी रखें," दादाजी ने आज्ञा दी.

कूकी ने फिर बोलना शुरू किया, "माननीय सदस्यगण, यह बात सभी जानते हैं कि लड़कों के खेल भयानक किस्म के होते हैं. उदाहरण के लिए क्रिकेट खेलते समय जहां वे आप चोटें खाते हैं, वहां खिड़कियों के शीशे भी कम नहीं तोड़ते."

"प्रधान मंत्रीजी, इस बात को तूल दे कर बोल रही हैं," राकेश ने बीच में टोका.

इसके जवाब में गृह मंत्री पिंकी बोल उठी, "आपने कभी जा कर नुक्कड़ की शीशे की दूकान वाले से पूछा है कि आप लड़कों के कारण वह कितनी कमाई करता है. आज वह खिड़कियों में शीशे लगा कर जाता है, कल आप तोड़ डालते हैं."

"मंत्री महोदया, आप यह दोष पूरे दल पर नहीं थोप सकतीं. हमारे कई सदस्य ऐसे भी हैं जो खेलों के पास तक नहीं फटकते!" मुन्नू बोला.

बस फिर क्या था! तुरंत जबरदस्त बहस छिड़ गई. आधा घंटा बहस चलती रही. जहां सदस्यों में गर्मी बढ़ने लगती थी, दादाजी बड़ी कुशलता से बीच में आ जाते थे. आखिर दादाजी बहस के बीच म बोले, "अब यह बहस खत्म करो. हमें बिल का दूसरा भाग भी निबटाना है. अब हम पहले भाग पर वोट लेंगे. जो सदस्य चाहते हैं कि लड़कों को खेल के मैदान में जाकर खेलना चाहिए, वे हाथ उठाएं."

सब लड़कियों के हाथ उठ गए. दादाजी ने वोट गिने. आठ वोट हुए. चार लड़कियां आज पालियामेंट में आई नहीं थीं.

"अब वे सदस्य हाथ उठाएं, जो चाहते हैं कि लड़के गली-मुहल्ले में जहां चाहें खेल सकते हैं."

सब लड़कों के हाथ उठ गए. दादाजी ने वोट गिने. लड़के भी आठ ही थे. टिंकू किसी जरूरी काम का बहाना करके आज नहीं आया था.

"अरे! यह तो 'डेडलॉक' हो गया," दादाजी दुखी होकर बोले.

"क्या हुआ, दादाजी?" कुछ ने घबरा कर पूछा.

"देखते नहीं हो, दोनों पक्षों के वोट बराबर हैं. इसे 'डेडलॉक' बोलते हैं,"

"स्पीकर महोदय, यदि आप कहें, तो मैं अभी सरोज, किरण, आशा और मोनी को बुला लाऊं और यह 'डेडलॉक' तोड़ दूं?" कूकी ने पूछा.

"नहीं, यह नहीं हो सकता. जो सदस्य पालियामेंट में आने का कष्ट तक नहीं कर सकते, उन्हें वोट देने का कतई अधिकार नहीं है," दादाजी ने मना कर दिया.

"स्पीकर महोदय, हम फैसला आपके हाथ में छोड़ते हैं," राकेश ने सुझाव दिया.

"वैसे नियम के अनुसार ऐसा 'डेडलॉक' स्पीकर को ही तोड़ना चाहिए. पर मैं अपनी राय देकर किसी पक्ष के लिए बुरा नहीं बनना चाहता. हमें अभी कई बैठकें और भी बुलानी हैं," दादाजी ने अपनी स्थिति साफ की.

तभी लगा जैसे भूचाल आ गया हो. भड़ाक से दरवाजा खुला और तेजी से दोनों दलों के बीच में से होती हुई कोई गोल-मटोल चीज दादाजी की गोद में आ गिरी. सभी ने हैरानी से देखा कि यह टिंकू था.

कमाल यह हुआ कि दादाजी ने बजाए टिंकू पर गुस्सा करने के, प्यार से उसकी पीठ सहलाई और खुश होकर बोले, "आ, भई टिंकू, तेरा ही इंतजार था. यहां 'डेडलॉक' हुआ पड़ा है, उसे तोड़ना तुम्हारा काम है."

टिंकू कांपते हुए बोला, "दादाजी, आप जो कहेंगे, मैं वही तोड़ दूंगा. पर पहले मुझे छुन्नू की अम्मां से बचाइए. वह मेरे पीछे आ रही है."

टिंकू की बात गले में ही फंसी रह गई. तभी छुन्नू की अम्मां जेट इंजन की तरह भड़भड़ाती हुई कमरे में आ घुसीं. अंदर आते ही गरजीं, "कहां है वह वकील का बेटा?"

टिंकू दादाजी के पीछे जा छुपा था. दादाजी ने पूछा, "क्या हुआ, छुन्नू की अम्मां? किसे पूछ रही हो?"

"अरे, पिंकी के दादा, आप भी यहीं बैठे हैं," छुन्नू की अम्मां झेंप कर बोलीं.

"बात क्या हुई? तुम तो बड़े गुस्से में दीखती हो?"

"पिंकी के दादा, आप इतने बच्चों को पढ़ाते या समझाते हैं, जरा उस वकील के बेटे टिंकू को समझा दिया करें. जब-तब वह आंख बचा कर पेड़ों पर चढ़ जाता है और कच्चे अमरूद तोड़कर खाता है."

"यह तो वह बहुत गलत बात करता है."

"अमरूद पक जाते हैं, तो मैं आप ही तोड़ कर मुहल्ले में बांट आती हूं," छुन्नू की अम्मां ने कहा.

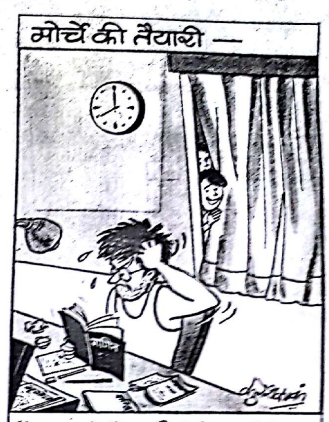

"अम्मां, झूठ क्यों बोलती हो? हमें तो कभी आपके पेड़ों के अमरूद खाने को नहीं मिले," राकेश बोला.

"अब तुम्हारी मां आप अकेली खा जाए, तो मैं क्या करूं? तुम स्कूल गए होते हो. आज दोपहर बाद भी मैं अमरूद तेरे घर देने आऊंगी. तब अपनी..."

कूकी बीच में ही बोल पड़ी, "पर, आप सीधे ही हमें अमरूद क्यों नहीं दे दिया करतीं."

"अम्मां, कहो तो हम अभी आपके घर चलें?" राकेश ने सुझाव दिया.

"चलो, पके अमरूद मैंने सुबह ही तुड़वा लिये थे. मुझे कौन वे बेचने हैं?" छुन्नू की अम्मां भाग गईं.

यह सुनते ही वहां हलचल मच गई. पूरी पालियामेंट उठ खड़ी हुई और दरवाजे की ओर बढ़ी.

दादाजी दुखी हो कर बोले, "अरी ओ छुन्नू की अम्मां, यह तुमने क्या किया? अभी तो मुझे बच्चों से 'डेडलॉक' तुड़वाना था!"

"पिंकी के दादा, तोड़-फोड़ आप बाद में कर करवा लेना. एकाध अमरूद आप भी चख कर खाइएगा. मौसमी फल मीठे होते हैं," छुन्नू की अम्मां बोलीं.

पालियामेंट के पीछे पीछे स्पीकर महोदय भी अमरूद खाने चल दिए.

९।६७०३ देवनगर, नई दिल्ली-५

Scanned by CamScanner